भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-7, अंक-6	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
शनिवार, 25 जून' 83	मानद सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.00

कृपावतार स्वामिश्री सहजानंदजी

जूनागढ़ मन्दिर का निर्माण-कार्य बहुत कुछ समाप्त हो गया था। मूर्ति प्रतिष्ठा हो सके इतना तो निश्चित हो गया था। अतः पू. ब्रह्मानन्दस्वामी ने मूर्ति प्रतिष्ठा का दिन निश्चित किया। वि. सं. 1884 के बैशाख कृष्ण तृतीय का मूहुर्त निकला। तब इन्होंने अनूप सिंह जी को गढ़पुर (गढ़डा) भेजा। अनूपसिंह वहाँ पहुँचे और महाराज को ब्रह्ममुनि का संदेश दिया:

''जीर्णदुर्ग के समग्र हरिभक्त इस प्रसंग पर आपके दर्शन की सोत्कंठ इन्तजार कर रहे हैं। अतः हम सबके मनोरथ सिद्ध कीजिये।'' महाराज प्रसन्न हो गये। इतने अधिक प्रसन्न कि इन्होंने अपनी ओर से अपने सब सखा, सब भक्तगणों और दादाखाचर को सपरिवार जूनागढ़ आने का निमंत्रण दिया और दूसरे ही दिन प्रस्थान करने की आज्ञा दे दी।

जूनागढ़ में वायुवेग से समाचार फैल गया ''महाराज आ रहे हैं, महाराज आ रहे हैं। प्रसन्नता, प्रसन्नता छा गई। संतमंडली तो स्वभाविक खुश थी ही, किन्तु हरिभक्त भी उत्साह में झूमने लगे। महाराज का भव्य स्वागत करना है। शहनाई बजेगी, बाजा बजेगा, गुलाल उड़ेगा। 'आ रहे हैं द्विजकुल तनुधारी, घनश्याम महाराज, पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वयम् !'

मीर—खुदा के ओलिये की खिदमत में !

वाजिंत्र बजाने के लिये जूनागढ़ के प्रख्यात मीरों को न्यौता दिया किन्तु मीर तो द्वेषी थे। इन्होंने स्पष्ट मना कर दी। एक लंगड़े मीर ने कहा: ''मैं आऊँगा, खुदा के ओलिये की खिदमत में।'' तब सब मीरों ने उसको हंसी मजाक में और अधिकतर तो कटाक्ष में कहा:

''जा, तू जा, तेरे बिना स्वागत नहीं होगा। स्वामिनारायण तुझे पगड़ी पहनायेंगे, जा।'' स्वामिनारायण मुझे पगड़ी पहनायेंगे, ऐसा संकल्प तो मीर को नहीं था, किन्तु उसने सोचा—''ऐसे खुदाई के लिये बाजा नहीं बजाऊँगा, तो मेरा बाजा और क्या काम में आयेगा?''

महाराज का स्वागत हुआ। वे प्रसन्न हो गये क्योंकि वे जानते थे कि कैसी विषम परिस्थितियों में कैसे द्वेष और उपाधियों के बीच रहकर यह छोटे समूह ने सत्संग को पकड़ रखा है। कैसी-कैसी आपत्तियाँ आई थीं ! किन्तु, संतों और निष्ठावान भक्तों ने मेरा ही आश्रय स्वीकार कर मन्दिर निर्माण का कार्य किया है। लंगडे मीर को देखकर गढ़पुर के काठी भक्तों को हंसी आई :

''वाह जीर्णदुर्ग ! आपका दुर्ग भी जीर्ण और आपका आदमी भी जीर्ण !'' सब हंसने लगे। किन्तु महाराज तो अंतर्यामी थे। महाराज ने मीर की ओर दृष्टि की। सब काठी भक्त चुप हो गये। महाराज ने कहाः ''जो इस संसार में अच्छे और गुणवान कहलाते हैं, वे तो हमारे काम में नहीं आये। हमारे काम में तो यह ही आया। काठी भक्त समझ गये कि इसकी भक्ति महाराज ने स्वीकार की है। मीर पर महाराज मेहरबान हो गये। अपने स्थान पर मीर को बुलाया और प्रसन्न होकर अपने सर पर पहनी हुई सुनहरी पगड़ी मीर के सर पर पहनाई। मीर खुश हो गया कि अब मेरी मजाक करने वाले ठंडे हो जायेंगे। किन्तु महाराज तो मीर का कल्याण करना चाहते थे। मीर ने कहाः

''हे महाराज ! आपको सब भगवान मानते हैं तो मुझे भी आप अपने आश्रय में लीजिये। मैं आपकी जो कहोगे वह सेवा करूँगा।'' मीर का भक्ति भाव देखकर महाराज प्रसन्न हो गये। फिर से मीर ने कहाः ''सच कहता हूँ, महाराज ! औरतों को देखकर खराब विचार मुझे आये होंगे मगर देह से मैं भ्रष्ट नहीं हुआ हूँ।'' यह सुनकर महाराज ने अपने काठी भक्तों को कहा, ''देखा ! कैसा निष्कपटी है? आज इनके मन के भी सारे पाप जल गये।''

काठी भक्तों को शिक्षा मिली कि किसी की शरीर की आकृति देकर निर्णय करना गलत है। वास्तविक मूल्य तो आन्तरिक सरलता का है और यह सरलता अगर हो तो महाराज की कृपा से कोई भी धन्य बन सकता है।

बाहर तो दूर-दूर से आये हुए हरिभक्तों की जयध्वनि–''स्वामिनारायण भगवान की जय हो '' अविराम चल रही थी। –क्रमशः

☆ ☆ ☆

पूरब से पश्चिम

करुणा, वात्सल्य के सागर प्रगट ब्रह्मस्वरूप प. पू. काकाजी 8 जून, 1983, बुधवार की सुबह 4.15 बजे विदेश के मुक्तों को अपनी मूर्ति का आनन्द बक्षने, धरातल पर मानवस्वरूप में प्रभु के अस्तित्व का मुमुक्षुओं को यकीन देने–आश्रितों को पक्की निष्ठा कराने, पहचान कराने और साथ ही साथ अपने निजी सेवकों को अपने स्वरूप की तत्त्वतः सम्यक् पहचान देने विदेश की कल्याण यात्रा पर प.भ. महेन्द्र बापू को साथ लेकर गये.....वहां जो-जो इस दिव्य विभूति के दर्शनमात्र करेंगे–सिर्फ इतनी भावना ही रखेंगे कि यह संत अच्छे हैं–वे भी तो अक्षरधाम के अधिकारी बनेंगे !

स्थूल देह से प.पू. काकाजी के विदेश जाने पर एक क्षण के लिये तो सभी को बैराग सा लग गया, परन्तु दिव्य स्वरूप से वे हरेक के साथ ही यहाँ हमारे पास है, ऐसी हरेक के दिल में वह अनुभूति भी करवा गये ! भगवान अखंड धारण की हुई ऐसी दिव्य विभूति को विदेश की समृद्धि-ऐश्वर्य या घूमने एवं धर्म प्रचार-प्रसार इत्यादि का आकर्षण तो होता ही नहीं....वे तो स्वयं ही अगणित ऐश्वर्य प्रताप के सम्राट होते हैं और सत्संग का प्रचार-प्रसार तो

इनके संकल्प मात्र से ही कहीं भी हो सकता है। उनकी हरेक क्रिया, संकल्प, आना-जाना, खाना-पीना अपने भक्तों के लिये ही रहता है। मानवस्वरूप में यह विभूतियां एक दिव्य चेतना का प्रवाह बहा कर अपने संपर्क में आने वाले हर कोई को निमज्जित करके काल, कर्म और माया से परे की एक दिव्यता की अनुभूति कराने ही तो धरती पर अवतरित होती है !

जिस प्रकार से प.पू. काकाजी विदेश की यात्रा पर गये हैं वह इस लक्ष्य की गवाही देता है। कोई भी सिद्ध या महात्मा कभी भी सिर्फ एक ही सेवक के साथ विदेश की कल्याण यात्रा पर इतनी मस्ती से जाता दिखाई नहीं पड़ेगा। अपनी निजी महिमा या धर्म प्रचार-प्रसार करने का यदि पू. काकाजी का कोई उद्देश्य होता तो और सब सिद्ध महात्माओं की तरह वे अपने साथ कई सेवकों को ले जाते या पूर्व तैयारियां आदि करने पहले ही भेज देते....जो उनकी महिमा का गुणगान करे और एक समाज को प्रभावित कर दे। परन्तु प.पू. काकाजी...! इनकी मस्ती तो कुछ अलग ही है...वे तो कहते भी हैं–'मेरे प्रभु मेरे योगी मेरे न्यारे है'। कैसी मस्ती होगी इनकी यह? और....सच में, प.पू. काकाजी की मस्ती इन्होंने धारण किये हुए प्रभु से ही है–यह इस बार सबको स्पष्ट दिखाई पड़ा। बीस-पच्चीस या ज्यादा सेवक साथ में हों तब भी इनकी मस्ती वही और एक ही सेवक के साथ जाते हुए भी इनकी मस्ती वही ! प.पू. काकाजी का दर्शन यानि–सिर्फ एक प्रभु के आकार से जीते असली गुणातीत संत का दर्शन !

प.पू. काकाजी को विदेश की कल्याण यात्रा पर जाते हुए विदाई देने दिल्ली और पंजाब से लगभग 40 भक्त 3 जून को बड़ौदा जाने के लिये निकले ...क्योंकि प.पू. हरिप्रसाद स्वामीजी ने तीर्थ स्थान सोखड़ा (हरिधाम) में प.पू. काकाजी का जन्मजयंती समारोह, विदाई समारोह का भव्य आयोजन किया था। यह नये समाज को एक नया उत्साह, एक जिज्ञासा गुजरात के अपने केन्द्रों-मंदिरों के दर्शन करने की भी थी। सत्संग के सूत्रधार पू. कांतिकाका की प्रेरणा से प.पू. स्वामिजी ने इसलिये सब प्रबंध कर ही रखा था–और तदनुसार पू. कान्तिकाका के फार्म नापा, ब्र. स्व. स्वामी श्री शास्त्रीजी महाराज निर्मित बोचासण मन्दिर, पू. शास्त्रीजी महाराज की जन्मभूमि 'महेळाव' स्थित मन्दिर, 'नड़ियाद'–प.पू. काकाजी का प्राकट्य स्थान, विद्यानगर-गुणातीत ज्योत एवं अनुपम मिशन, 'सांकरदा' मन्दिर और साक्षात् स्थान हरिधाम के दर्शन सभी ने किये। वहां यह सब देखकर हर एक ने यही कहा कि–'ऊपर अक्षरधाम है'–ऐसा सुना है, परन्तु अपनी 9 साल की छोटी सी आयु में प.पू. काकाजी ने प.पू. पप्पाजी को कहा था कि–'धरती पर हम स्वर्ग लायेंगे.....' वाकई स्वर्ग नहीं, प.पू. काकाजी के उसी संकल्प ने धरातल पर अक्षरधाम उतार ही दिया है।

5 जून, रविवार को सोखड़ा में संतगण ने प.पू. काकाजी को चंदन से स्नान कराया..... और प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. कान्तिकाका के सानिध्य में प.पू. काकाजी का 66वां जन्म जयन्ती समारोह एवं विदाई समारोह लगभग तीन हजार भक्तों ने खूब आनन्द व भव्यता से मनाया। सभा मंच पर विराजमान 'अक्षरधाम की कैबिनेट' के दर्शनमात्र से ही दृष्टि बस बंध जाती थी।

6 जून को प.पू. हरिप्रसाद स्वामीजी के सानिध्य में वासणा आयुर्वेदिक फार्म एवं सोखड़ा

पुराने मंदिर के दर्शन से लाभान्वित हुए, जहां कि प.पू. स्वामीजी ने सभी को खूब आनन्द कराया और साथ-साथ संतप्रधान जीवन जीने के सत्संग को अपने जीवन में कैसे बसा लेना-वह सुझाव दिया। सब भक्तों की निश्चल सेवा हर एक के दिल को छू गई। छः की रात को हृदय में खूब आनन्द लिये—सभी बम्बई जाने निकले। सात की सुबह तारदेव में अनिर्देश की परम मंगलकारी विभूति प.पू. काकाजी के वहां सभी ने अनोखे दर्शन किये। उस दिन प.पू. काकाजी की मूर्ति कुछ अलग सा ही अलौकिक प्रकाश लिये थी....बस उन्हें निहारा ही करो ऐसा दिल करा करता था। सात की शाम को भारतीय विद्याभवान के गीता भवन में बम्बई के महंत पू. दासस्वामीजी, मा. श्री पागेजी, पू. कांतिकाका, पू. गोरधनकाका एवं स्थानीय भक्तों के सानिध्य में प.पू. काकाजी की जयंती एवं विदाई निमित्त सभा हुई....सभी ने प.पू. ककाजी के प्रति अपने दिल के उद्‌गार-भावनायें रखी, जो सुनकर सबको एक स्पष्ट ख्याल आया कि हमें क्या प्राप्ति हुई है...कैसी विभूति ने हमें अपनी गोद में बिठाया है !

लन्दन पहुंचते ही प.पू. काकाजी ने हमें एक आशीष पत्र लिखा है....और सुबह उठते ही एवं रात को सोते समय दो बार स्वरूपयोग-भजन करने विशिष्ट रूप से आदेश दिया है ! प्रभु की कैसी अनुपम वात्सल्यता? हम सब पर कैसी करुणा दृष्टि? वहां खूब प्रवृत्तिशील रहते हुए भी हम सबको याद करते रहते हैं। वहां पर हमारे अनुपम मिशन के युवकों प.पू. काकाजी की प्रसन्नता पा लेने हेतु दिन रात देखे बिना खड़े पांव सेवा में हैं। लंदन में भी 12 जून को 600-700 हरिभक्तों के सानिध्य में प.पू. काकाजी की जन्मजयंती भव्यता से मनाई गई और अब वे बेल्जियम, फ्रांस, वेस्ट जर्मनी, स्वीटजरलैण्ड और इटली जा रहे है....तथा शिकागो में गुरुपूर्णिमा मनायेंगे।

☆ ☆ ☆

....और श्रीजी महाराज ने कहा—

6. इन्द्रियों की जो क्रियाएं है उन्हें यदि श्री कृष्ण भगवान और उनके भक्तों की सेवा में लगाये रखें तो अंतःकरण शुद्ध हो जाता है और जीव को अनन्त काल से लगे हुए पापों का नाश हो जाता है। यदि इन्द्रियों की वृत्तियों को स्त्री आदि विषयों में लगाये तो उसका अंतःकरण भ्रष्ट हो जाता है और वह कल्याण के मार्ग से गिर जाता है। इसलिये शास्त्रों में जिस प्रकार से विषयों को भोगने को कहा है उसी प्रकार नियम में रहकर विषयों को भोगना, चाहिये, परन्तु शास्त्रों की मर्यादा का उल्लंघन करके उनका उपभोग नहीं करना चाहिये। साधु का संग रखना चाहिये और कुसंग का त्याग करना चाहिये। कुसंग का त्याग करके साधु का संग रखने से उसके देह में स्थित अहं बुद्धि और देह के संबंधियों के प्रति की ममत्वबुद्धि निवृत्त हो जाती है तथा भगवान में असाधारण प्रीति होती है और भगवान के सिवा अन्य विषयों में बैराग्य होता है।

गढ़डा प्रथम प्रकरण-8
शनिवार, 26 नवं., 1819

☆ ☆ ☆

स्वामी की बातें

24. 'मार-मार' करता कोई हम पर हमला बोल दे तब भी समझना कि मेरे स्वामी का किया ही सब कुछ होता है, उनकी इच्छा के बिना सूखा पत्ता भी किसी से हिल नहीं सकता। प्र.: 1-88
25. जीव के लगे रहने के दो ठिकाने हैं, भगवान में लगा रहे या माया में; किन्तु बिना आधार तो कैसे रहा जाये? प्र. : 1-91
26. भगवान और भगवान के साधु इन दो के सम्मुख ही देखते रहना। ये दो ही दर्शनीय (देखने लायक) है; इनके अतिरिक्त किसी में माल नहीं है। प्र. : 1-101
27. बड़े संत के प्रति मनुष्यभाव नहीं रहा है यह कैसे जाना जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि इनकी कोई भी क्रिया में हमें दोष नजर नहीं आये; यह ही दिव्यभाव है। प्र. : 1-102
28. राजा के कुंवर को भंगी मार नहीं सकता, इसी प्रकार काल, कर्म, माया आदि किसी की हिम्मत नहीं कि भगवान के भक्त को कष्ट दे। प्र. : 1-108
29. मनमाने दो आदमियों का अकेले काम करने के बजाय बड़े संत की आज्ञा से खाली बैठे रहना या वह कहे इतना करना ही श्रेष्ठ है। प्र. : 1-109
30. बड़े संत को क्या कराने की लगन है यह कैसे समझ पायें? यह पूछा, तब वड़ताल का सोलहवां वचनामृत पढ़वा कर कहा कि इसमें कहा है वह करवाना है। वह क्या? तो भगवान का भजन और भगवान के भक्त का संग। ये दो ही रहस्य और अभिप्राय हैं। यह करने लग जायें तो प्रसन्न होने में कहां देर है? अतः जिन्हें भगवान को प्रसन्न करना हो वे इसमें लग जायें। प्र. : 1-111

☆ ☆ ☆

BLESSINGS FROM
HIS DIVINITY
P. PUJYA KAKAJEE

LONDON, 3.7.83

Anoopam Mission
The Lea, Denham (Bucks)
Western Avenue

All-All-Delhi Satsangis.....Sisters & Children

.....Please Celebrate properly and systematically Guru-Purnima on 24ht July 1983 in presence of Gurujee to please Param-Guru-Param Atma Yogiji Maharaj & Swaminarayan. We will celebrate in Chicago-San Francisco Hall and offer special prayers for you all for your health, happiness and prosperity and friendliness in this group and life...Hope, all the family members & children must be in good health and gay. May God shower His Blessings on all devotees of Punjab, Haryana & Delhi, Always do prayers-night and morning for God's love and Blessings, Grace and Compassion. He is so merciful like Sun that He bestows it without any price, but we must accept it open heartedly and sincerely...With best regards to all.

Yours Sincerely
Dadukaka's
Jay Swaminarayan

Compliments to all.....

Regd. No. D (D) 655

सुबह की प्रार्थना

राग—वो चांद खिला..... वो तारे हँसे.... ये रात अजब मतवारी है,

समझने वाले समझ गये हैं, ना समझे—ना समझे वो अनाडी है
उगती प्रभा से कार्य प्रारम्भ में, सहाय करो ऐसी याचना है
सर्व कार्य में एक ही हेतु, राजी होवे—राजी होवे एक ही तूं
उल्झन, विक्षेप, अभाव-अवगुण को, कायम की विदाई दे दूँ
संप....सुहृदभाव ऐक्य के हेतु, सहना हो—सहना हो वह सह सकूं
स्वामिनारायण—स्वामिनारायण—स्वामिनारायण बिनती करूँ-2
घटघट में स्थल स्थल में, आबालवृद्ध सभी मुक्तों में
छोटे या बड़े प्रसंग पे, देखना मैं—देखना तुझको भूलूँ ना
दिव्यता....दिव्यता अखंड रहे ऐसा याचुं मैं—
निर्दोषबुद्धि के अमृतपान को, जीवन में—जीवन में पचाऊँ मैं
स्वामिनारायण—स्वामिनारायण—स्वामिनारायण बिनती करूँ-2
निमित्त बनी, कार्य करी, फिर मूर्तिरूपी घोंसले में
मान-अपमान और यश-अपयश को छोडूँ मैं—छोडूँ तेरे चरणों में
अखंड अंतर में रहकर, हमारी रक्षा करना तूँ—
दिव्य जीवन के दिव्य आनन्द में मस्त बनी—मस्त बनी तेरे गुन गाऊँ
स्वामिनारायण—स्वामिनारायण—स्वामिनारायण बिनती करूँ-2

उगती प्रभा से.....

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	7.7.83	गुरुवार	योगिनी एकादशी, व्रत
2. दि.	18.7.83	सोमवार	नवमी, श्री हरिजयंती
3. दि.	20.07.83	बुधवार	देवशयनी एकादशी, व्रत आज से चातुर्मास के विशेष नियम लिये जाते हैं।
4. दि.	24.7.83	रविवार	गुरुपूर्णिमा

Published by Sadhu Mukundjivandas for Yogi Divine Society,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at Thakkar printing press, 2588, Basti Punjabian, Subzi Mandi, Delhi-110 007